भा वा अ शि प - वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

विश्व वानिकी दिवस – 2023

दिनांक : 21 मार्च, 2023

भावाअशिप - वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा दिनांक 21.03.2023 को चंदवा प्रखंड सभागार में विश्व वानिकी दिवस – 2023 आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के एक दल श्री निसार आलम, श्री बी.डी.पंडित, श्री सुरज कुमार, श्री करम सिंह मुण्डा एवं श्री बिनोद राम द्वारा वानिकी जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि के रुप में कृषि विज्ञान केंद्र बालुमाथ, लातेहार की वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख {I/C} डॉ. सुनीता कांडेयांग उपस्थित रही। आयोजित कार्यक्रम में चंदवा प्रखंड के विभिन्न गावों के लगभग 45 (प्रेरक दीदी एवं अन्य सदस्यों) ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि डॉ. सुनीता कांडेयांग, वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र बालुमाथ, लातेहार ने कार्यक्रम के लिए वन उत्पादकता संस्थान की सराहना करते हुए बताया कि कृषि लागत एवं पैदावार की तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए लोगों को वर्षा आधारित कृषि के अतिरिक्त सूखी खेती पर बल देना चाहिए। उन्होनें जोर देकर कहा कि कृषि के विकल्प के रुप में मानव वानिकी से भी अतिरिक्त पर आश्रित है। वनों का क्षेत्रफल बढ़ाकर संसाधन विकास किया जाना चाहिए जिससे कृषि पर बोझ कम होगा। श्री करम सिंह मुण्डा, तकनीकी सहायक के संचालन में श्री बी.डी.पंडित, तकनीकी अधिकारी ने जल-जंगल-जमीन के संबंध को बताते हुए प्रत्येक दीदी को अपने अपने गांव के स्कूलों, आंगनबाड़ी केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में पौधरोपण कर उसे संरक्षित करने का आग्रह किया।

श्री सुरज कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने विश्व वानिकी दिवस-2023 की थीम वन और स्वास्थ्य (Forests & Health) पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कैसे वन हमारे स्वास्थ्य एवं आय में सहायक सिद्ध होता है। उन्होने बताया कैसे लोग वन के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से कई पर्यावरणीय सेवाओं से लाभान्वित होते हैं जैसे कार्बन प्रच्छादन, तापमान नियंत्रण और वायु शुद्धिकरण। उन्होने बांस के विस्तृत बाजार को बताया एवं वन-वर्धन में बांस की भूमिका को समझाया।

श्री निसार आलम, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने बांस रोपण कर आय-वर्धन एवं वन-वर्धन की अपील की। श्री करम सिंह मुण्डा, तकनीकी सहायक ने संस्थान द्वारा वन-वर्धन के विभिन्न प्रयासों को बताया। उन्होने विभिन्न प्रकार के औषधीयों पौधों के स्रोत के रूप में वनों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

संस्थान के दल द्वारा आज के मुख्य कार्यक्रम लाह उत्पादन एवं प्रसंस्करण को वन-वर्धन से जोड़ कर उस पर विस्तार से चर्चा की गई। एक ओर जहां लाह उत्पादन से आय-वर्धन होगा वहीं फ्लेमेंजिया सेमियालता. बैर, पलास, कुसुम लगाकर भावी पीढ़ी के लिए लाह उत्पादन के संसाधन संरक्षित होगा एवं वन-वर्धन होगा जो जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में कारगर साबित होगा। वानिकी दिवस को वनरोपण दिवस के रुप में परिवर्तित कर इस अवसर पर वन रोपण कर सही मायने में विश्व वानिकी दिवस मनाने का आग्रह किया।

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां